14.6.21

Page :
Date: / / (1)

घनानन्द की विरहानुभूति :

स्वच्छन्द प्रेमधारा के प्रतिनिधि कवि घनानन्द ने स्वच्छन्द प्रेम की कविता को समृद्ध किया। ये सुजान नाम की वेश्या पर अनुरक्त थे। आगे चलकर इनकी सुजान अलौकिक कृष्ण का प्रतीक बन गई और इनका प्रेम निर्गुण हो गया। शुक्ल जी के शब्दों में "लौकिक प्रेम की दीक्षा पाकर ही ये पीछे भगवत्प्रेम में लीन हुए।" अपने लौकिक प्रेम की असफलता एवं सुजान से वियोग होने के कारण इनके काव्य में विरह-वर्णन की अधिकता है और इन्हीं वर्णनों में उनके हृदय के भावों की सच्ची अभिव्यक्ति भी हुई है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने घनानन्द के विरह की विशेषता इन शब्दों में व्यक्त की है— "घनानन्द ने न तो बिहारी की तरह विरह-ताप को बाहरी मान से मापा है, न बाहरी उछल कूद दिखाई है। जो कुछ हलचल है वह भीतर की है— बाहर से वह वियोग प्रशान्त और गम्भीर है, न उसमें करवटें बदलना है, न सेज का आग की तरह तपना है, न उछल-उछल कर भागना है। उनकी 'मौन मधि पुकार' है"।

श्री परशुराम चतुर्वेदी ने ठीक ही लिखा है— "घनानन्द ने विरह के महत्व को भली-भाँति समझा था। इसीलिए प्रेमी के विरह-दग्ध हृदय तथा उसके सूक्ष्मातिसूक्ष्म एवं अनिर्वचनीय मानसिक व्यापारों का जैसा सुन्दर वर्णन अपनी कविता द्वारा उन्होंने किया है वैसा बहुत कम कवि कर पाये हैं।... उनके विरह वर्णन में एक आश्रित का अनुरोध एवं मर्यादित आत्मनिवेदन है जो अपनी स्वाभाविकता के कारण सुनने वाले का मन

बदला भी काफी और औचित्य पूर्ण है।"

तीव्र एवं सरस विरहानुभूति —

घनानन्द का विरह वर्णन अद्वितीय है। इसमें गहरी वेदना है। उनकी विरहानुभूति बड़ी तीव्र है, किन्तु सरस भी। इसमें हृदय का सच्चा एवं तीव्र प्रेम उमड़ रहा है। वे सच्चे प्रेमोन्मत्त गायक थे। इसीलिए उनकी कविता में चमत्कार-प्रदर्शन का अभाव है। वे कविता सृजन करने के लिये परेशान नहीं होते थे। आचार्य पंडित विश्वनाथप्रसाद मिश्र के शब्दों में "उनके हृदय का योग ही कविता का रूप धारण कर लेता था"। घनानन्द ने कहा भी है —

लोग हैं लागि कबित्त बनावत, मोहिं तो मेरे कबित्त बनावत।

इनकी कविता में हृदय की सूक्ष्मातिसूक्ष्म अन्तर्वृत्तियों का उद्घाटन हुआ है। इन्होंने विरहिणी की मानसिक स्थितियों को अनेक रूपों में चित्रित किया है। विरहिणी की अधीरता और पीर का वर्णन देखिए —

अन्तर हौं किधौं अन्त रहौं, दृग फारि फिरौं कि अभागनि भीरौं।
आगि जरौं अकि पानि परौं, अब कैसी करौं हिय का बिधि धीरौं।
जो घनआनन्द ऐसी रुची, तौ कहा बस है अहो प्राननि पीरौं।
पाऊँ कहाँ हरि हाय तुम्हें, धरनी मैं धँसौं कि अकासहिं चीरौं॥

इनमें विरही हृदय की तड़पन का बड़ा मार्मिक वर्णन हुआ है। ऐसे मार्मिक छन्दों से घनानन्द की कविता भरी पड़ी है। विरहिणी के उपालम्भों की छटा भी देखने योग्य है। बड़ी

(3)

मार्मिक है और क्यों न हो हृदय की सच्ची अनुभूति है। विर-हिणी कहती है, 'हे निठुर, पहले तो तूने प्रेम जताकर अपनी ओर आकर्षित कर लिया। अब तुझे इस प्रकार निठुरता दिखाना शोभा नहीं देता'—

मोही मोह जनाय कैं, ओर अमोही होहिं।
मोही मोहि सों कठिन; क्यों कोर मोही होहि॥

घनानन्द की विरहिणी नायिका कालिदास के यक्ष की भाँति ~~मेघ~~ मेघ के द्वारा सन्देश भेजती है—

परकाजहि देह को धारे फिरौ परजन्य जथारथ ह्वै दरसौ।
निधि नीर सुधा के समान करौ सब ही बिधि सज्जनता सरसौ॥
घनआनन्द जीवन दायक हौ कछू मेरियौ पीर हिये परसौ।
कबहूँ वा बिसासी सुजान के आँगन मो अँसुवान कों लै बरसौ॥

काव्यशास्त्रियों ने विरह की दस अवस्थाएँ मानी हैं- स्मृति, गुण कथन, अभिलाषा, मूर्च्छा, व्याधि, उद्वेग, प्रलाप, जड़ता, उन्माद और मरण। घनानन्द के काव्य में विरहान्तर्गत इन सभी अवस्थाओं का चित्रण बड़ी चतुराई और भावुकता से हुआ है। इस विरह वर्णन में घनानन्द पर कहीं-कहीं फारसी पद्धति के विरह-वर्णन का प्रभाव दिखाई देता है—

कारी क्रूर कोकिला कहाँ को बैर काढ़ति री,
कूकि कूकि अब ही करेजो किन कोरि लै।

विरोधाभासमूलक प्रवृत्ति —
घनानन्द ने विरोधमूलक शैली के अन्तर्गत अपने काव्य में अलंकार का उद्देश्य भावोत्कर्ष ही रखा है। कवि ने विरोधाभास का आश्रय लेकर उक्ति वैचित्र्य का सौंदर्य उद्घाटित किया है। आचार्य पंडित विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने घनानन्द की कविता में विरोधाभास की प्रचुरता देखकर कहा है — "विरोधाभास के अधिक प्रयोग से घनानन्द की सारी रचना भरी पड़ी है। आवश्यकता यह कहा जा सकता है कि जिस पुस्तक में कहीं भी यह प्रवृत्ति न दिखाई दे, वो निःसंकोच घनानन्द की कृति से पृथक किया जा सकता है। इस 'अन्वय व्यतिरेक' से इनकी कृतियों को छाँटने में बड़ी सहायता मिल सकती है"
इनकी इस विरोधाभासमूलक प्रवृत्ति का उदाहरण द्रष्टव्य है —

झूँठ की सचाई छाक्यो त्यों हित कचाई पाक्यौ,
ताके गुनगन घनआनन्द कहा गनौं।

यहाँ विपरीत लक्षण से विरोधाभास की सुन्दर झलक है। इसी प्रकार एक अन्य उदाहरण —

'देखिए दशा असाध्य अँखियाँ निपेटनि की,
भसमी बिथा पै नित लंघनि करति हैं।'

यहाँ 'भसमी बिथा' पद के श्लेष द्वारा कवि ने आँखों की दशा एवं अंतःवृत्ति का सुन्दर उद्घाटन किया है। घनानन्द ने रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति आदि अलंकारों का प्रयोग भी प्रेम की सच्ची अनुभूति व्यक्त करने के लिये किया है। घनानंद का भाषा सौंदर्य भी देखने योग्य है

(5)

इनकी भाषा के स्निग्ध सात्विक और चलते प्रवाह एवं भाव-व्यंजना प्रभावकारी है। स्वाभाविकता एवं सरलता इनकी भाषा की सबसे बड़ी विशेषता है। मुग्धा नायिका की बुरी दशा का वर्णन इनके सवैये में देखिए —

खोय गई बुधि, सोय गई सुधि, रोय हँसै उन्माद जग्यो है।
मौन गहे चकि, चाक रहे, ललित कहा करें, हैन दृग ठग्यो है।।
जानि परै नाहिं जान। तुम्हें लखि ताहि कहा कछु आहि खग्यो है।
सोचनि ही पचिये घनआनन्द हेत पग्यो किधौं प्रेम लग्यो है।।

नाद सौंदर्य —

घनानन्द के नाद सौंदर्य का उत्कृष्ट उदाहरण शुक्ल जी ने अपने इतिहास में दिया है। वे घनानन्द की भाषा की संगीतात्मकता में काव्य सौन्दर्य का उत्कर्ष देखते। ~~उस~~ उस पर थे। यह कवित्त देखिए —

ऐरे रे वीर पौन! तेरो सबै ओर गौन बारि,
तोसो और कौन मनै ढरकौंहीं बानि दै।
जगत के प्रान, ओछे बड़े को समान घन,
आनन्द-निधान सुखदानि दुखियान दै।।

शुक्ल जी के शब्दों में उनके कवित्त के अंतिम चरण में आए हुए 'आनन्द निधान सुखदान दुखयानि दै' में मृदंग की ध्वनि का बड़ा सुन्दर अनुकरण है।

आशीष कमल